स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्ब के संस्थापक

वेदवेदाङ्ग के विशिष्ट विद्वान्

शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन

सङ्क्षिप्त जीवनवृत्त तथा ग्रन्थपरिचय

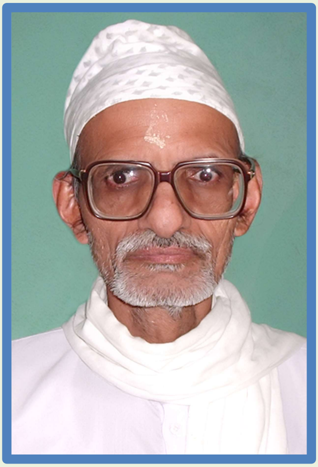

स्वाद्ध्यायशाला

काठमाण्डू, नेपाल

युधिष्ठिराब्द ५१२६, कलिसंवत् ५०९० नभोमास

वि.सं. २०८२ मिथुनमास [आषाढ] (जून, 2025)

स्वाद्ध्यायशाला

स्वाद्ध्याय स्वशाखावेद को कहते हैं। स्वाद्ध्याय का अध्ययन गुरु-शिष्यपरम्परा से नियमपूर्वक करने का विधान है। वेद चार हैं– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। वेद के स्वरूप, प्रयोग, अर्थ और रहस्य को अवगत करने के लिए वेदाङ्गों का अध्ययन आवश्यक होता है। वेदाङ्ग छः हैं– शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्दःशास्त्र और ज्योतिष। वेद और वेदाङ्गों के अध्ययन को ब्राह्मणों के लिए निष्कारण धर्म माना गया है (**आगमः खल्वपि ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेय इति**– पातञ्जलमहाभाष्य, पस्पशाह्निक)। सर्वप्रथम अध्ययनद्वारा अर्थबोध, तत्पश्चात् तदनुरूप आचरण, तदनन्तर प्रचारण की कर्तव्यता– यह क्रम हमारे यहाँ हजारों वर्षों से मान्य रह आया है। इसी दिशा में स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्ब प्रयत्नशील है। इसी सन्दर्भ में स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्ब के संस्थापक का तथा प्रकाशित ग्रन्थों का परिचय विद्याप्रेमियों के आह्लाद के लिए दिया जाता है।

वेदवेदाङ्ग के विशिष्ट विद्वान् शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन

विक्रमसंवत् १९९७ की श्रीपञ्चमी/ वसन्तपञ्चमी (सरस्वतीपूजा) के अगले दिन वैदिकपरम्परा में प्रयुक्त सौरचान्द्र गणना से मधुशुक्ल-षष्ठी के दिन (सन् १९४१-२-२) हिमवत्खण्ड के गण्डकीक्षेत्र के त्रितुङ्गाचल (तनुङ्/ तनहुँ) जिले के प्रशासनकेन्द्र बन्दिपुर नाम के स्थान में प्रख्यात विद्वान् श्रीकृष्णाचार्यद्वारा ख्यापित वासिष्ठ-मैत्रावरुण-कौण्डिन्येतित्रिवरयुक्त कौण्डि-न्न्यगोत्रीय कान्यकुब्जोच्चकुलीन त्रिशुक्ल ब्राह्मणवंश में पं. नरनाथशर्मा आचार्य तथा पद्मा (गङ्गामाया) के पुत्ररत्न के रूप में श्रीसरस्वती के प्रसाद से एक शिशु ने जन्म लिया था विद्या, धर्म, सत्य, न्याय के सदैव पक्षपाती

रहेनेव़ाला, मूल वैदिक शास्त्र के अध्ययन तथा वैदिक धर्म के जागरण के लिए विख्यात पं. शिवराजाचार्य कौण्डिन्न्यायन के रूप में वेदवेदाङ्ग का उपासक सनातन धर्मावलम्बियों के लिए मिल गया।

उस समय पिताजी पं. कविराज नरनाथ आचार्य तनहुँ जिले के प्रशासन-केन्द्र बन्दिपुर में कार्यरत थे। अतः बाल्यकाल के कुछ वर्ष वहीं बिताकर वे ७ वर्ष के वय में (सन् १९४८ में) पैतृक स्थल चुँदी रम्घा में आकर रहने लगे। प्राथमिक शिक्षा तथा पिताजी के कार्यस्थलों में साथ में जाकर पिताजी पण्डित कविराज नरनाथ आचार्य से तथा चुँदी रम्घा में स्थापित भाषापाठशाला से भी पाया। सन् १९५५ सितम्बर में तनहुँ से काठमाण्डु तक की १०० किलोमीटर से भी अधिक की दूरी पैदल ही चलकर आगे अध्ययन करने के लिए काठमाण्डू पहुँचे थे। काठमाण्डू में रहकर प्रथमा तथा पूर्वमध्यमा तक रानीपोखरी-संस्कृत-पाठशाला में अध्ययन किया। पूर्वमध्यमा का दो वर्षों का पाठ्यक्रम एक ही वर्ष में उत्तीर्ण किया। तत्पश्चात् नेपाल-राजकीय-संस्कृत-महाविद्यालय में प्रविष्ट होकर अध्ययन किया और साहित्य मुख्य विषय लेकर उत्तरमध्यमा उत्तीर्ण किया। उसके बाद मुख्य विषय अद्वैत-वेदान्त तथा उपविषय साहित्य विषय लेकर शास्त्री (२०१७) उत्तीर्ण किया। तदनन्तर अद्वैतवेदान्त विषय में आचार्य (२०२०) उत्तीर्ण किया। संस्कृत में एम.ए. (२०२३/ सन् १९६६) तथा व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में अध्ययन करके साहित्य विषय में आचार्य (२०२४/ सन् १९६७) उत्तीर्ण किया। उसी समय साथ साथ ही अध्ययन करके आयुर्वेद (२०२३) तथा अंग्रेजी विषय (२०२४) में शास्त्री उत्तीर्ण किया। उसके बाद आगरा विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र (फिलोसोफि) में एम.ए. (सन् १९७१) किया। उन्होंने उपर्युक्त सभी परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया। प्रायः सभी परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान में उत्तीर्ण होकर अनेक स्वर्णपदक भी

उन्होंने पाया है। संस्कृत एम्.ए. परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर त्रिभुवन विश्वविद्यालय में सन् १९६७ के सम्पूर्ण स्नातकोत्तर परीक्षाओं में सर्वप्रथम होकर कुलपतिपदक (चान्स्लर् मेडल्) उन्होंने प्राप्त किया। इसी प्रकार अगले वर्ष साहित्याचार्य में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर त्रिभुवन विश्वविद्यालय के सन् १९६८ के सम्पूर्ण स्नातकोत्तर परीक्षाओं में सर्वप्रथम होकर पुनः कुलपतिपदक (चान्स्लर् मेडल्) उन्होंने प्राप्त किया। त्रिभुवन विश्वविद्यालय में दो वार विश्वविद्यालयप्रथम होकर दो कुलपतिपदक (चान्स्लर् मेडल्) प्राप्त करनेवाले वे ही एकमात्र विद्वान् हैं। आयुर्वेदशास्त्री परीक्षा में (२०२३) भी नेपाल में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कर रजतपदक प्राप्त किया।

उन्होंने सन् १९८६ में वाराणसी के सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से वेद-वेदान्त विषय में "वैदिकयज्ञा औपनिषदमात्मज्ञानं च" शीर्षक में विद्यावारिधि और वैदिक शिक्षाशास्त्र (ध्वनिशास्त्र) में "कौण्डिन्न्यायनशिक्षा" ग्रन्थ के लिए सन् १९९२ में वाचस्पति (डी.लिट्.) उपाधि प्राप्त किया।

उन्होंने ८–१० वर्ष के वय (उम्र) में *शिक्षेत्यादि श्रुतेरङ्गम्* इस अमरकोश वचन से वेदाङ्गों की सूचना प्राप्त की। कुछ वर्ष पश्चात् अमरकोष की टीकाओं में शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्दः, ज्योतिष इन छः वेदाङ्गों की जानकारी प्राप्त हुई। वि.सं. २०१६–१७ (सन् १९६०–६१) में शास्त्रिकक्षा में अध्ययन करते समय वैदिक वाङ्मय का तथा वेदाङ्गों का परिचय प्राप्त करने के बाद उनके अन्तःकरण में जीवन में वेद तथा वेदाङ्गों के गहन अध्ययन करने का भाव उत्पन्न हुआ। पश्चात् संस्कृत एम्.ए. के अध्ययनक्रम में निरुक्त के **साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुः** इत्यादि सन्दर्भ से प्रभावित हो कर छः वेदाङ्गों की सहायता से वेदार्थज्ञान करने की ओर आगे बढे। इसी समय छन्दःशास्त्र का भी गहन अध्ययन करने लगे तथा **वृत्तनक्षत्रमाला**-नामक ग्रन्थ

की रचना का भी प्रारम्भ किया। पश्चात् पाणिनीय व्याकरण महाभाष्य में उल्लिखित **ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्योयो ज्ञेयः** इस आगमवचन से भी प्रेरित होकर वेद तथा छः वेदाङ्गों के गहन अध्ययन में संलग्न हुए। २०२५ (सन् १९६७) से वेदाङ्गज्योतिष का भी अध्ययन-अनुसन्धान प्रारम्भ किया। मीमांसकशिरोमणि कुमारिलभट्टपाद ने मीमांसाशास्त्र के आधार पर वेदों का अर्थ जानने के लिए सङ्कल्प किया था (मीमांसाश्लोकवार्त्तिक, प्रतिज्ञासूत्र, श्लो.९) । उनके वचन को देखकर हमारे पिताजी ने उक्त वचन में एक पद बदलकर षडङ्गों के सहायता से वेदों का अर्थ जानने के लिए सङ्कल्प किया और तदनुसार आजीवन वेद-वेदाङ्गों के गम्भीर अध्ययन में प्रवृत्त हुए। उन्होंने अपने सङ्कल्प को इस तरह व्यक्त किया–

षडङ्ग-शास्त्रतेजोभिर्विशेषेणोज्ज्वलीकृते।
वेदार्थज्ञानरत्ने मे तृष्णाऽतीव विजृम्भते॥

उन्होंने वि.सं. २०२४ मिथुनमास (सौर आषाढ) में नेपाल के त्रिभुवन विश्वविद्यालय में अद्वैतवेदान्त के अध्यापक (लेक्चरर) के रूप में वृत्तिकार्यका आरम्भ किया और त्रिभुवनविश्वविद्यालय तथा संस्कृतविश्वविद्यालय में ३६ वर्ष तक (वि.सं. २०६०/सन् २००४ तक) अद्वैत-वेदान्त विषय का औपचारिक अध्यापन का वृत्तिकार्य किया।

२०२४–२५ (सन् १९६७–६८) में ही वैदिक शिक्षाशास्त्र का तथा व्याकरण-सिद्धान्त का गहन अध्ययन करके विविध तथ्यों के प्रकाशन का भी प्रारम्भ किया। उसी समय **जिम्दो नेपालि भासा सिद्धान्त** की स्थापना तथा प्रचार भी किया। अन्य वेदाङ्गों का भी अध्ययन-अनुसन्धान प्रारम्भ किया।

काठमाण्डू में वि.सं. २०३६ (सन् २०८०) में स्वाध्यायशाला का निर्माण हुआ। उसके बाद स्वाद्ध्यायशाला के नाम से प्रकाशनादि कार्य होने लगा। इस

प्रकार का वेद-वेदाङ्गों के अध्ययन की पद्धति को पुनर्जागरित करनेवाले हमारे परमपूज्य पिताजी सुगृहीतनामा शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन (विक्रमसंवत् १९९७ मधुशुक्लषष्ठी — २०७४ इषशुक्लदशमी [२ फरवरी सन् १९४१ – ३१ अगस्त सन् २०१७]) विशिष्ट संस्कृतविद्वान्, वैदिक (शुक्लयजुर्वेदी), शिक्षा-शास्त्री, कल्पशास्त्रमर्मज्ञ, उत्कृष्ट भाषाशास्त्री, वैयाकरण, कोषकार, वेदाङ्ग-ज्योतिषविद्, गणितज्ञ, पुराणविद्, इतिहासज्ञ, धर्मशास्त्री, मीमांसक, वेदान्तज्ञ, आयुर्वेदज्ञ एवं काव्यशास्त्री हैं। इस प्रकार एक ही व्यक्ति में प्राच्य वाङ्मय के प्रायः सभी विषयों की विज्ञता संस्कृत वाङ्मय के इतिहास में सुदुर्लभ है। उन्होंने संस्कृत शिक्षा के सुधार के लिए भी लम्बा सङ्घर्ष किया। वर्तमान समय में नेपाल तथा भारत के विद्यालय तथा विश्वविद्यालय में पाश्चात्त्यजनप्रवर्तित संस्कृत तथा अन्य विषय के पाठ्यक्रम तथा पठनपाठन से विद्या धर्म का संरक्षण नहीं हो सकता यह उनका निश्चय था। केवल व्याकरण, साहित्य, न्याय, ज्योतिष इत्यादि विषयों में से एक विषय अच्छे से अध्ययन करके आचार्य तथा विद्यावारिधि करने पर भी विद्वत्ता प्राप्त नहीं होती है। सच्ची विद्वत्ता के लिए आर्ष शिक्षाप्रणाली ही आवश्यक है, जिस में मीमांसाशास्त्र तथा छः अङ्गों से सहित स्वशाखावेद का गुरुमुख से विधिपूर्वक अध्ययन करना चाहिए।

वर्तमान परिस्थिति में उन्हों ने संस्कृतशिक्षा को कैसे सन्तुलित और सर्वजनोपयोगी बनाया जा सकता है, इसका निदर्शन भी प्रस्तुत किया। (१) धार्मिक (२) शास्त्रीय (३) वैज्ञानिक तथा (४) साधारण, इन चार प्रकार के शिक्षा के रूप में संस्कृतशिक्षा लेने के इच्छुक चार प्रकार के लोगों के लिए अनुकूल बनाकर संस्कृतशिक्षा सञ्चालित की जा सकती है, इसके लिए नवीन पाठ्यक्रम-स्वरूप निर्माण किया है। साधारणशिक्षा के रूप में संस्कृतशिक्षा लेने इच्छुक जनों के लिए नीतिशास्त्र विषय की व्यवस्था आवश्यक होने की बात को सबलतापूर्वक उठाया। धार्मिकशिक्षा के पक्ष के समावेश के लिए

संस्कृतशिक्षा में तथा साधारण शिक्षा में भी अङ्ग्रेजी विषय अनिवार्य न करके ऐच्छिक तथा अतिरिक्त ऐच्छिक विषय बनाने के लिए प्रस्ताव किया।

उन्होंने औपचारिक विद्यालयीय तथा विश्वविद्यालयीय शिक्षा का भी उपयोग करते हुए विद्यावृद्धि के लिए आजीवन कार्य किया। उन्होंने कहा भी है–

आत्मजा अत्र भवतो जाताः षट् चिरजीविनः।
तेष्वाद्योऽहं शिवस् तातपादादेव च लब्धवान्॥

शक्तिं च प्रतिभोन्मेषं श्रुतं चाऽपि समासतः।
अध्यापकेभ्योऽन्येभ्यश् च शासकाधीनतामपि॥

गतेभ्योऽधीत्य स्वप्रज्ञाबलाद् दिग्दर्शनं ततः।
लब्ध्वा विद्याविवृद्ध्यर्थं प्रयते च यथामति॥

(वेदाङ्गज्योतिष-कौण्डिन्न्यायनव्याख्यान, पृ.४३७)

उन्होंने गुरुमुख से (गुरुमुखोच्चारणानूच्चारणपूर्वक) शास्त्रीय विधि को अनुसरण करके स्वशाखा (माध्यन्दिनीय-वाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेदशाखा) के मन्त्रसंहिता, ब्राह्मणग्रन्थ, श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र एवं परिशिष्ट ग्रन्थों का अध्ययन किया और अपने सभी पाँच पुत्रों को उसी तरह पढाया भी। वैदिकप्रवरयज्ञेश्वर-पौडेल के शिष्य मीमांसाचार्य तथा आचार्योत्तरोपाधिमान् (पोष्टाचार्य) पं. बुद्धि-सागर पराजुली उनके वेदोपाध्याय (वेदाध्यापक) हैं। वैदिक-सनातन-वर्णाश्रम-धर्म के निष्ठावान् अनुयायी कौण्डिन्न्यायन जी ने अपने जीवन में वेद, वेदाङ्ग, वेदोपाङ्ग, स्मृति, पुराण, दर्शन इत्यादि वैदिक मूल शास्त्रों के और अन्य संस्कृत वाङ्मय के तलस्पर्शी (अत्यन्त गम्भीर) अध्ययन को, तत्सम्बद्ध विशिष्ट ग्रन्थप्रणयन को ही लक्ष्य बनाया। साथ ही प्रचलित सर्वकारीय संस्कृत-शिक्षा-प्रणाली के सुधार के लिए भी बहूत कार्य किया।

उन्होंने इसके अतिरिक्त अङ्ग्रेजी, इतिहास, भूगोल, विज्ञान, आधुनिक गणित इत्यादि अन्य विषयों का भी औपचारिक तथा अनौपचारिक रूप में अध्ययन किया और अपने ग्रन्थलेखन में इन विषयों के ज्ञान का भी आवश्यकताअनुसार भरपूर उपयोग किया।

उन्होंने अपने सभी पाँच पुत्रों को और दोनों पुत्रियों को अपने गृह स्वाध्यायशाला में संस्कृत का अध्यापन किया। आगे परीक्षाएँ देकर प्रथम पुत्र वेदाचार्य, द्वितीय पुत्र मीमांसाचार्य तथा तृतीय पुत्र वेदान्ताचार्य उत्तीर्ण हैं। एक पुत्री इतिहासपुराणाचार्या है। सभी ने विद्यावारिधि तक अध्ययन किया है तथा नेपाल-संस्कृत-विश्वविद्यालय में प्राध्यापन कर रहे हैं और वैदिक वाङ्मय के अध्ययन, अनुसन्धान तथा प्रकाशन का कार्य भी कर रहे हैं। अन्य दो पुत्र एवं एक पुत्री ने पूर्वमध्यमा तक मुख्य विषय के रूप में संस्कृतव्याकरण (पाणिनीय-व्याकरण) अध्ययन करके विज्ञान विषय लेकर उच्च परीक्षाएँ उत्तीर्ण किए। एक पुत्र चिकित्सक और दूसरा पुत्र औषधविज्ञानविद् बनकर तत्तत् विषय में विश्वविद्यालयों में प्राध्यापन का कार्य कर रहे हैं। पुत्री आयुर्वेद में एम्.डी. है।

भारतवर्ष के विलक्षण प्रतिभाशाली विशिष्ट विद्वान् शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन जी ने अपनी संस्कृत-पाठन शैली के विषय में "रातदिन संस्कृत के छोटछोटे वाक्य का प्रयोग करके तातभाषा के रूप में सन्तति को संस्कृत पढाया गया" यह बात बताया है–

दोषावस्तर् हि प्रयुक्तैश्च मौखैर् ह्रस्वैर् वाक्यैर् बालभावानुकूलैः।
दैव्यां भारत्यां नये स्वान् सुतान् हि सैषा वाणी तातभाषाऽस्ति चैषाम्॥

(मदीया संस्कृताध्यापनपद्धतिः, श्लोक १)

प्रातिपदिकरूपावली तथा धातुरूपावली कण्ठस्थ कराके उन के स्वरूपों का ज्ञान कराने से संस्कृत का अध्ययन सरल तथा व्यावहारिक होता है इस सिद्धान्त का प्रयोग भी किया। इस विषय में उन्होंने कहा है–

रूपैर् नाम्नां वेदलोकानुकूलैर् धातूनां चाऽऽदर्शभूतैर्हि कैश्चित् ।
सम्यग् घोष्यैः सम्प्रबोध्य स्वभावं भाषायास्तद्बोधमेषां च तन्वे ॥

(मदीया संस्कृताध्यापनपद्धतिः, श्लोक २)

शब्दरूपों का तथा धातुरूपों का प्रयोग से युक्त वाक्यों का लेखन कराकर संस्कृतभाषाज्ञान को सुदृढ बनाया जा सकता है–

एषां रूपाणां प्रयोगेण युक्तं वाक्यव्रातं लेखयित्वा च शश्वत् ।
कञ्चिद् रम्यं वा प्रबन्धं कथां वा लेखप्रौढिं कर्तुमेषां समीहे ॥

(मदीया संस्कृताध्यापनपद्धतिः, श्लोक ३)

संस्कृत-शिक्षा के सुधार के लिए उन्होंने नेपाल-संस्कृत-परिषद् की स्थापना (वि.सं. २०२८/सन् १९७०) तथा सञ्चालन किया। उस समय की सरकार से लागू नवीनशिक्षा नीति से संस्कृतशिक्षा में किए गए आघात का विरोध में इस संस्था के माध्यम से विभिन्न गतिविधियाँ की गईं। २०४४ तथा २०४६ में विशिष्ट गोष्ठियाँ भी आयोजित की गईं। साथ ही वैदिक-सनातन-वर्णाश्रम-धर्म के क्षेत्र में कार्य करने के लिए विद्वत्सभा की स्थापना (वि.सं. २०४०/ सन् १९८३) तथा सञ्चालन किया तथा **विद्वत्सभाको सन्देश** नाम से धर्मसन्देश (१-७) मुद्रित रूप में जनसमक्ष प्रचारित किए गए।

उन्होंने स्वाध्यायशालाकुटुम्ब के पक्ष से भी वैदिकसनातनवर्णाश्रमधर्म के विविध पक्षों को लेकर **स्वधर्मसन्देश** (१-१२) प्रकाशित तथा प्रचारित किया।

गुरुकुलीय शिक्षापद्धति पर भी शास्त्रानुप्राणित मन्तव्य व्यक्त किया। साथ ही गुरुकुलीयशिक्षा के पाठ्यक्रम का भी निर्देश किया है। विक्रमसंवत् २०७१ आषाढ १६ में (२०१४-६-३०) **वैदिक शिक्षा, पृथक् धारा का संस्कृत शिक्षा तथा साधारणशिक्षा** विषय में एक गोष्ठी का आयोजन किया। पश्चात्

भारत के दशवर्षीय संस्कृतशिक्षानीति के विषय में भी अपना विस्तृत विचार दिया।

उन्होंने वेद-वेदाङ्ग-वेदोपाङ्ग-सम्बद्ध विद्या के अनेक विधाओं में ४० से अधिक अनुसन्धानपूर्ण विशिष्ट ग्रन्थ एवं अनेक निबन्ध भी रचे हैं। इन ग्रन्थों और निबन्धों में प्रस्तुत तत्-तत् शास्त्रों में किए गए प्रामाणिक परिष्कार से भारत-वर्षीय विद्याओं के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान हुआ है। इनमें कुछ ग्रन्थ स्वाद्ध्याय-शाला, काठमाण्डू से प्रकाशित हैं तथा कतिपय ग्रन्थ वाराणसी से प्रकाशित हैं।

सर्ववैदिकशास्त्रज्ञ विद्वान् शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन जी की कृतियों को देखकर बहूत से भारतीय विद्वानों ने उनके कार्य की प्रशंसा भी की है। यथा–

नेपाल के विशिष्ट विद्वान् शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन के द्वारा बडे परिश्रम से प्रणीत ग्रन्थ कौण्डिन्न्यायनशिक्षा का यत्र तत्र अवलोकन कर मैं ग्रन्थकार के विपुल वैदुष्य का प्रत्यक्षीकरण कर आनन्द से परिप्लुत हो रहा हूँ। नेपाली पण्डित महोदय वेद तथा व्याकरण के महनीय पण्डित हैं।

–पद्मभूषण आचार्य बलदेव उपाध्याय, वाराणसी, २५–१–१९९४

विविधशास्त्रपरिशीलनधिषणः स्वनामधन्य आचार्यशिवराजः कौण्डिन्न्यायनः सोहापोहं काव्यप्रकाश-व्याख्यायां हैमवत्यां विवृतौ प्रवृत्तो विजयतेतराम्। सकलशास्त्रमन्थनपरिणामभूतेयं तदीया विराजते विवृतिः।

–डा. भागीरथप्रसादत्रिपाठी "वागीशशास्त्री", वाराणसी, १७–५–१९८५

स्वाद्ध्यायशालिनोऽस्य मनीषिणः "कौण्डिन्न्यायनशिक्षा"-"वेद-भाषानिघण्टु"नामकौ ग्रन्थौ एतदीयां वैदुषीं व्युत्पत्तिञ्च प्रमाणयतः।

–आचार्य डा. जयमन्तमिश्रः, दरभङ्गा, १४–१०–१९९४

स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्ब के प्रकाशित
वेदवेदाङ्गादिशास्त्रसम्बद्ध विशिष्ट ग्रन्थ

स्वाद्ध्यायशाला के प्रकाशित तथा अप्रकाशित विविध विधाओं के ग्रन्थों का सङ्क्षिप्त विवरण अधोनिर्दिष्ट है–

शिक्षाशास्त्र अथवा ध्वनिशास्त्र

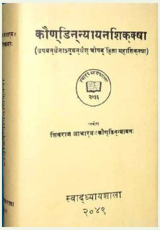

कौण्डिन्न्यायनशिक्क्षा (कौण्डिन्यायनशिक्षा) [A Complete and Critical Study of Vedic & Sanskrit Phonetics, 1992] (प्रातिशाख्यादि-सर्ववेदाङ्गशिक्षाग्रन्थ-सारसङ्ग्रहात्मकः समीक्षापूर्णः पुष्कलसर्वाङ्गोऽपूर्वो विपुलकायो वेदाङ्ग-शिक्षाग्रन्थः, काठमाण्डू, २०४९ वै.)– इस ग्रन्थ में प्राप्य सभी प्रातिशाख्यग्रन्थों का तथा संस्कृतशिक्षाग्रन्थों का समीक्षापूर्ण सार ११५८ कारिकाओं में प्रतिपादित है और उन कारिकाओं की प्रातिशाख्यादि के प्रमाणवचनों से पूर्ण संस्कृतव्याख्या भी है। भूमिका में वेदाङ्गशिक्षाशास्त्र का इतिहास दिया गया है। इस में शिक्षाशास्त्रों के आलोडन से वेदलोकसाधारण संस्कृत के दीर्घ अवर्ण, अन्य दीर्घ स्वर, ऋकार, लृकार, एकार, ओकार, अनुस्वार, विसर्ग, ञकार, णकार, वकार यमवर्ण, किड्-किडाकारवर्ण जैसे अर्वाचीन काल में दुर्विज्ञात वर्णों का भी यथार्थ रूप को वर्णित किया गया है। आवश्यक स्थलों में संस्कृत-शिक्षाशास्त्र के आधुनिक भारतीय तथा पाश्चात्त्य अनुसन्धाताओं के मत का खण्डन करके वेदाङ्गशिक्षा के मूल सिद्धान्त को स्पष्ट किया है। कहीं पतञ्जलिद्वारा किये गये पाणिनि के खण्डन को भी सप्रमाण निराकरण करके पाणिनि के मत का औचित्य स्पष्ट किया है। इससे वैयाकरणनिकायों में प्रसिद्ध **"यथोत्तरं प्रामाण्यं मुनीनाम्"** इस कथन का अपवाद भी है ऐसा स्पष्टीकरण देना आवश्यक हुआ है। ग्रन्थ के परिशिष्ट में ७ दुर्लभ शिक्षाग्रन्थ शौनकशिक्षा, शैशिरीयशिक्षा, व्याडिशिक्षा, चारायणीयशिक्षा, कौहलीयशिक्षा, सर्वसम्मतशिक्षा और पारिशिक्षा सङ्गृहीत

हैं। यह ग्रन्थ वेदाङ्गशिक्षाशास्त्र के तैत्तिरीयारण्यक में वर्णित वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम, सन्तान (संहिता) इन छहों विषयों का साङ्गोपाङ्ग प्रतिपादन करनेवाला ५००० वर्षों के संस्कृतवाङ्मय के इतिहास में अद्वितीय वेदाङ्गशिक्षाग्रन्थ है और वैदिक तथा लौकिक संस्कृत की प्रचलित अशुद्ध उच्चारणरीति में संशोधन के लिए रचा गया है। शिक्षाकार कहते हैं–

दुरुच्चारणदुर्गन्धनिरासनपटीयसीम्।
शिक्षानासाशुद्धिमेतां प्राप्य वेदः प्रसीदतु॥
प्रसन्नः सन् स कुरुताच् छ्रेयो वेदानुयायिनाम्।
यायुस्तेऽपि सुखेनात्मावदानं परिहृत्य शम्॥

(द्र.– पाणिनीयशिक्षाव्याख्या, पृ.१९३)

व्यञ्जनद्वित्व दिखाके तथा उनके पूर्वाङ्गता-पराङ्गता को भी स्पष्ट करके सम्पूर्ण ग्रन्थ को मुद्रित किया गया है (यथा– कौण्डिन्न्यायनशिक्क्षा)। यह ग्रन्थ सम्पूर्णानन्द-संस्कृतविश्वविद्यालय से वाचस्पति (डी.लिट्.) उपाधि के लिए सन् १९९२ में स्वीकृत ग्रन्थ है तथा स्वाध्यायशाला (काठमाण्डू) से प्रकाशित है।

पृष्ठ 896 / मूल्य भा.रू. 400.00

वाकारविवेकः इस गद्यात्मक लघुग्रन्थ में संस्कृत के दन्तोष्ठ्य वकार के विषय में विस्तृत विवेचना किया गया है। इस में पवर्गीय बकार (B), दन्तोष्ठ्य वकार (V) एवम् वृत्ताकार दो होठों से उच्चरित होनेवाला व़कार (W) के बीच रहे अन्तर को स्पष्ट किया गया है। यह त्रिभुवनविश्वविद्यालय की अनुसन्धानपत्रिका में २०२८ संवत् में (सन् १९७१ जून) प्रकाशित है। इसके विषय अङ्ग्रेजी भाषा में वसुधा पत्रिका में भी प्रकाशित हैं (वर्ष १४ अङ्क ४, दिसम्बर १९७१)।

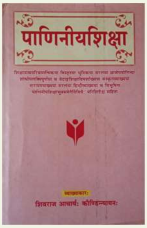

पाणिनीयशिक्षा [Sanskrit Phonetics According to Paninian School, 1998, 2008] (आचार्यकौण्डिन्न्यायन-कृतवेदाङ्गशिक्षाविमर्शाख्यव्याख्यासहिता, सन् १९९८, २००४, द्वि.सं. २००८, २०१३, २०१७, २०२१)– छात्रोपयोगी तथा शोधोपलब्धिपूर्ण संस्कृत व्याख्या तथा हिन्दी टीका भी इसमें

प्रस्तुत की गई है। भारतवर्षीय वेदाङ्गशिक्षा के ग्रन्थों के परिचय से युक्त भूमिका, वेदाङ्गशिक्षाशास्त्रीय पारिभाषिक शब्द-विवरण, श्लोकसूची इत्यादि परिशिष्ट इस ग्रन्थ में जोडे गए हैं। संस्कृत के दुर्विज्ञात कुछ वर्णों के और क्ष, ज्ञ जैसे संयुक्ताक्षर के विषय में विशेष प्रकाश भी डाला गया है। सम्बद्ध विषय में अन्य अनुसन्धाताओं की त्रुटि की ओर भी ध्यानाकर्षण किया गया है। पाणिनीयशिक्षा का यह द्वितीय संस्करण श्रेष्ठतम संस्करण है। इस ग्रन्थ को कतिपय नेपाली तथा भारतीय विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम में भी रक्खा गया है। यह ग्रन्थ चौखम्बा-विद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है।

द्वि.सं. पृष्ठ 256 / मूल्य भा.रू. 200.00

नारदीयशिक्षा [Theory of Classical Music and Phonetics According to Samavedic School, 2002] (आचार्य-कौण्डिन्न्यायनकृतव्याख्यासहिता, सन् २००२, २०१५, २०२१)– इस संस्करण में छात्रोपयोगी तथा शोधोपलब्धिपूर्ण संस्कृत व्याख्या के साथ हिन्दी टीका भी प्रस्तुत की गई है। भारतवर्षीय वेदाङ्गशिक्षा के ग्रन्थों के परिचय से तथा भारतवर्षीय गानपरम्परा का और नारदीयशिक्षा का विशेष परिचय से युक्त भूमिका एवं पारिभाषिक शब्द-विवरण इत्यादि परिशिष्ट इस ग्रन्थ में जोडे गए हैं। यह ग्रन्थ चौखम्बा-विद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है।

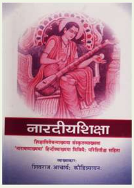

पृष्ठ 288 / मूल्य भा.रू. 225.00

प्रतिज्ञासूत्रम् [Theory of Phonetics According to Shukla Yajur-vedic School, 2014] (संस्कृत-हिन्दीव्याख्यासहितम्, सन् २०१४)– इस संस्करण में छात्रोपयोगी तथा शोधपूर्ण संस्कृत व्याख्या तथा हिन्दी टीका और केशवदैवज्ञकृत **कारिकावली** (शिक्षाग्रन्थ) भी हिन्दीव्याख्यासहित मुद्रित है। यह ग्रन्थ चौखम्बा-विद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है। व्याख्याकार तथा सम्पादक– आमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन।

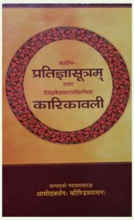

पृष्ठ 148 / मूल्य भा.रू. 200.00

वेदभाषानिघण्टुः (कौण्डिन्न्यायनकोषः) [1993] (भूलोककाण्डान्तर्गत-

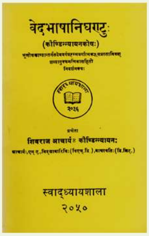

देववर्ग-ब्रह्मवर्गात्मकः, २०५० वै.)– यह ऋग्वेद से लेकर आज तक की संस्कृत भाषा में प्रचलित सम्पूर्ण प्रमुख संस्कृत शब्दों को सङ्गृहीत करनेवाले और अमरकोष की शैली में अनुष्टुप्श्लोकों में रचे गए बृहत् संस्कृतशब्दकोश का निदर्शन के रूप में प्रस्तुत देववर्ग-ब्रह्मवर्गात्मक भाग है। प्रस्तावना और शब्दानुक्रमणिका से युक्त काठमाण्डू में प्रकाशित यह भाग सभी संस्कृतज्ञों के लिए, विशेषतः वैदिकों, मीमांसकों तथा धर्मशास्त्रियों के लिए सङ्ग्राह्य है। वेद-वेदाङ्ग के गम्भीर अध्ययन में प्रवृत्त होनेवाले छात्रों को बाल्यकाल में ही इस कोष के इस भाग को कण्ठस्थ करना-कराना उचित है। अमरकोष में कूल १५२७, वैजयन्तीकोष में ३२१६ तथा इस कोष में ६००८ श्लोक हैं। अतः यह कोष अमरकोष से लगभग चौगुना तथा वैजयन्तीकोष से लगभग दुगुना बडा है। अमरकोष के ब्रह्मवर्ग में ५८, वैजयन्तीकोष के ब्राह्मणाध्याय में २४० तथा इस वेदभाषानिघण्टु के ब्रह्मवर्ग में ६७१ श्लोक हैं। होशियारपुर से १६ भागों में प्रकाशित "वैदिक पदानुक्रमकोष" में तथा पुना से ३४ भाग प्रकाशित हो जाने पर भी अकार से प्रारम्भ होनेवाले शब्दों का भी सङ्कलन अभी तक समाप्त नहीं होरहे "इन्साक्लोपिडिक् डिक्सन्रि अव् संस्कृत् अन् हिष्टोरिकल् प्रिन्सिपल्ज्" नामक कोष में असङ्कलित अघप्रस्तरजैसे महत्त्वपूर्ण वैदिक शब्द वेदभाषानिघण्टु में सङ्कलित है। इस कोष में मङ्गलाचरण तथा ये काण्ड हैं– भूलोककाण्ड, अन्तरिक्षकाण्ड, द्युलोककाण्ड, सामान्यकाण्ड, परिशिष्ट-काण्ड तथा आख्यातकाण्ड। इस कोष को पूर्ण करने में रचनाकार को प्रारम्भ से लगभग ५० वर्षों का समय लगा था। उन्होंने यह कोष अपने जीवन के अन्तिम वर्ष में पूर्ण किया था। इस कोष का अवशिष्ट अंश अप्रकाशित है।

पृष्ठ 72 / मूल्य भा.रू. 25.00

व्याकरण

परिष्कृत अष्टाध्यायी (त्रिमुनिकृत व्याकरण को पूर्णता देनेवाली तथा आवश्यक संशोधन से युक्त अष्टाध्यायी) – इस अमुद्रित ग्रन्थ में आवश्यक वार्तिक, इष्टि, गणपाठ तथा चान्द्र-कातन्त्रादि व्याकरण के आवश्यक विषयों को भी समावेश करके अष्टाध्यायी के परिष्कृत तथा अभ्यसनीय (कण्ठस्थी-करणयोग्य) पाठ को सम्पादित किया गया है। कुछ स्थलों में वैदिक शिक्षाशास्त्र के तथा अन्य व्याकरण के अध्ययन के आधार पर विशेषतः वैदिक प्रयोग के लिए आवश्यक नवीन वार्तिक भी जोडे गए हैं। इसका वेदपरक व्याख्या करने की योजना थी, किन्तु वह अधूरी रह गई है। तथापि सम्पादक के कौण्डिन्न्यायनशिक्षा में बहुत स्थलों में पाणिनीय-व्याकरणविषयक गहन व्याख्या, विवेचना तथा समीक्षा उपलब्ध है। इस ग्रन्थ का सम्पादन १९८६ में ही पूर्ण हुआ था, तथापि व्याख्या करके ही प्रकाशित करने की सम्पादक की योजना के कारण अभी तक यह ग्रन्थ अप्रकाशित ही रह गया है।

प्रातिपदिक-रूपावलि तथा धातु-रूपावलि– इस ग्रन्थ में न केवल लौकिक रूप ही सङ्कलित है, अपितु वैदिक रूप भी सङ्कलित है तथा यहाँ स्वरचिह्न भी अङ्कित किया गया है। यहाँ अस्मत्-प्रातिपदिक के कुछ रूप के उदाहरण दिखाया जाता है– अहम् आवाम् (आवम्) वयम् (वयाम्, अस्मे) इत्यादि। धातु-रूपावलि में वेदों में प्रयुक्त लेट्-लकार के रूप भी सङ्कलित हैं। अन्य लकार के रूपों में वैदिक रूप भी समाविष्ट हैं। इस तरह का रूपावलि का पुस्तक अभी तक प्रकाशित नहीं दिखाई देता है। यह ग्रन्थ भी अप्रकाशित ही है।

धातु-पाठ– इस ग्रन्थ में न केवल पाणिनीय धातुपाठ सङ्कलित है, अपितु अन्य व्याकरण के धातुपाठ भी सङ्कलित है। इसका अन्तिम सम्पादनकार्य बाँकी है। यह ग्रन्थ भी अप्रकाशित है।

नीतिशास्त्र

हितोपदेश– नारायण पण्डित द्वारा रचित कथाओं द्वारा नीति सिखानेवाला

हितोपदेश-नामक ग्रन्थ भारतवर्षीय समाज में अत्यन्त प्रसिद्ध है। इसकी भाषा तथा कुछ कथाएँ बालबालिकाओं तथा किशोरकिशोरीयों के लिए उपयुक्त नहीं दिखाई देती हैं। इस लिए हितोपदेश का भाषिक तथा विषयगत सम्पादन पुनः करके बालहितोपदेश, कुमारहितोपदेश, किशोरहितोपदेश और हितोपदेश (परिष्कृत) करके ४ प्रकार के हितोपदेश सम्पादित किए गए हैं। इन ग्रन्थों का प्रकाशन अभी तक नहीं हुआ है।

चतुर्वर्गपीयूषपिन्वनकम्– धर्म अर्थ काम मोक्ष इन चारों पुरुषार्थ से सम्बद्ध अनगिनत सुभाषितों का सङ्कलन संस्कृतवाङ्मय से किया गया है। इसका अन्तिम सम्पादन बाँकी है।

ज्योतिष

वेदाङ्गज्योतिषम् [Astronomy According to the Veda, 2005]

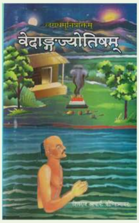

(सोमाकरभाष्येण कौण्डिन्न्यायनव्याख्यानेन च सहितम्, सन् २००५, २०१४, २०२१)– दुर्लभ सोमाकरकृत भाष्य के साथ आचार्य-शिवराज-कौण्डिन्न्यायनद्वारा रचित अभिनव व्याख्यान से युक्त लगधमुनिप्रोक्त वेदाङ्गज्योतिष का यह अपूर्व संस्करण है। हिन्दी में भी भूमिका और व्याख्या प्रस्तुत किए गए हैं। भूमिका भाग में वेदाङ्गज्योतिष का प्रामाण्य और श्रौत-स्मार्त धर्म कृत्य के काल के निर्धारण में वर्तमान काल में भी वेदाङ्गज्योतिष का अनुसरणीयत्व भलीभाँती समझाया गया है। प्रचलित सिद्धान्तज्योतिष के ग्रन्थों के संवत्सरारम्भादि अनेक वेदाङ्गज्योतिषप्रतिकूल प्रतिपादन का अग्राह्यत्व भी इस में सिद्ध किया गया है। वेदाङ्गज्योतिष के अनुसन्धाताओं के लिए दुर्बोध रही हुई वेदाङ्गज्योतिषप्रोक्त अधिमासव्यवस्था का प्राचीन ग्रन्थ तथा नेपाल के इतिहास के अनुसन्धानद्वारा सर्वथा नवीन, युक्तियुक्त, वैज्ञानिक और स्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत की गई है। वैदिक कालगणनापद्धति का वास्तविक रूप भारतीय -सर्वकारनियुक्त पञ्चाङ्गसुधारसमिति के अध्यक्ष मेघनाद साहा तथा

सदस्यसचि निर्मलचन्द्र लाहिडी से भी यथार्थ आकलन नहीं किया गया था। इस लिए सभी विशिष्ट स्थलों पर शङ्करबालकृष्ण दीक्षित, लाला छोटेलाल बार्हस्पत्य, सुधाकर द्विवेदी, बालगङ्गाधर तिलक, वेङ्कटेश बापूजी केतकर, शामशास्त्री इत्यादि व्याख्याताओं की व्याख्या की भी समीक्षा की गई है। परिशिष्ट में श्लोकसूची, पदसूची, हस्तलिखित महत्त्वपूर्ण दो पाण्डुलिपियों की प्रतिलिपियाँ, वेदाङ्गज्योतिषोक्त वैदिकतिथिपञ्जी इत्यादि महत्त्वपूर्ण सामग्री समाविष्ट है। वेदाङ्गज्योतिष का इतना विस्तृत व्याख्यात्मक प्रकाशन अभी-तक किसी भी भाषा में नहीं हुआ है। इस ग्रन्थ में गणित का प्रयोग भी भरपूर किया गया है। व्याख्या के अन्त में व्याख्याकार कहते हैं–

वेदो लोके परं ज्योतिः श्रेयोमार्गप्रदर्शने।
प्रसादने चक्षुषोऽस्य यत्नोऽस्माभिरयं कृतः ॥
प्रसन्नचक्षुर् वेदोऽयं वेदभक्तियुताय च।
जनाय देयाच् चक्षुश् च वेदात्मालोकनक्षमम् ॥
बलवन्नास्तिकाऽपास्ता वेदाङ्गज्योतिषस्मृतिः।
या तदुद्धारजं पुण्यं भूयाज् ज्ञानान्तरायहृत् ॥

योऽसावात्मा जगतस् तस्थुषश् च स सूर्यगः पूरुषः स्वर्णवर्णः।
उपासितश् चैतया व्याख्यया च प्रकाशतामात्मनैक्यं गतश् च ॥

यह ग्रन्थ चौखम्बा-विद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है। इस ग्रन्थ को कतिपय नेपाली तथा भारतीय विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम में रक्खा गया है। इस ग्रन्थ के उपर नेपाल में तथा भारत में गोष्ठियाँ भी आयोजित हुई हैं।

पृष्ठ 544 / मूल्य भा.रू. 400.00

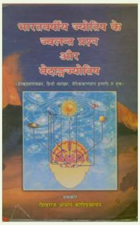

भारतवर्षीय ज्योतिष के ज्वलन्त प्रश्न और वेदाङ्गज्योतिष (सन् २००८)– इस ग्रन्थ में इन विषयों पर सप्रमाण विस्तृत विचार प्रस्तुत किया गया है– १. वैदिक पञ्चवर्षात्मक युग २. नववर्षारम्भ माघ में अथवा चैत्र में? ३. संवत्सर-परिवत्सरादि की

उपेक्षा क्यों? ४. चान्द्र वर्षों की उपेक्षा और बार्हस्पत्य वर्षों का स्वीकार क्यों? ५. सौरचान्द्र अयन की उपेक्षा क्यों? ६. चान्द्र ऋतु ७. चान्द्रमासों की प्रधानता ८. चान्द्रमास की पूर्णिमान्तता क्यों? ९. अयन के अन्त में ही अधिमास मानने की व्यवस्था १०. क्षयमास कैसे स्वीकारा गया? ११. खण्डतिथि क्यों? १२. वेदाङ्गज्योतिष ग्रन्थ की उपेक्षा क्यों? १३. वैदिक नक्षत्रक्रम १४. वेदाङ्गज्योतिष में बताई गई नक्षत्र-नामकरण की रीति १५. वेदाङ्ग-ज्योतिष ग्रन्थ के परिष्कार और व्याख्यान में ध्यान क्यों नहीं गया? १६. पञ्चाङ्ग-सुधार-समिति का वेदाङ्गज्योतिष ग्रन्थ में ध्यान क्यों नहीं गया? । इस ग्रन्थ में लगधमुनिप्रोक्त याजुष-वेदाङ्गज्योतिष की हिन्दी व्याख्या और विवेचनात्मक भूमिका भी संलग्न है। यह ग्रन्थ चौखम्बा विद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है। (ग्रन्थ हिन्दी भाषा में है।)

वि.सं. २०६७ से वेदाङ्गज्योतिषानुसारी **वैदिक तिथिपत्रम्** प्रकाशित है। वि.सं.२०८०, २०८१ और २०८२ के वैदिक तिथिपत्र जालस्थान (archive.org) पर संस्कृत तथा हिन्दी भूमिका सहित उपलब्ध हैं।

पृष्ठ 272 / मूल्य भा.रू. 150.00

वैदिकतिथिपत्रम् ५०८९ (वैदिक पञ्चाङ्ग, वि.सं.२०८१, सन् २०२३–२०२४) पृष्ठ 84/ मूल्य भा.रू. 80.00

वैदिकतिथिपत्रम् ५०९० (वैदिक पञ्चाङ्ग, वि.सं.२०८२, सन् २०२४–२०२५) पृष्ठ 84/ मूल्य भा.रू. 85.00

वेदान्त

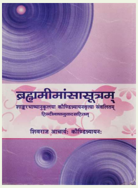

ब्रह्ममीमांसासूत्रम् (शाङ्करभाष्यानुकूलया कौण्डिन्न्यायन-वृत्त्या सहितम्, सन् २००२)– इस ग्रन्थ में सूत्रार्थप्रदर्शन के बाद अधिकरणरचना और कारिकाओं में भी अधिकरण का सार दिया गया है। सूत्रार्थ हिन्दी भाषा में भी दिया गया है। व्याख्या मूलतः

शाङ्करभाष्य का अनुकूल है। कुछ स्थलों में वेदादिशास्त्र की दृष्टि से शाङ्करभाष्य की भी समीक्षा की गई है। धर्ममीमांसा की दृष्टि से भी कतिपय स्थलों में सम्बद्ध विषयों की समीक्षा की गई है। भूमिका में दर्शनशास्त्रपरिचय, भारतवर्षीय प्रमुखदर्शनों का परिचय, ब्रह्ममीमांसाग्रन्थ का परिचय, ब्रह्म-मीमांसासूत्रग्रन्थ के अध्ययन के अधिकारी का निरूपण तथा वेदान्तशास्त्र के ५८ ग्रन्थकारों का परिचय भी समाविष्ट किया गया है। यहीँ पर सूत्रकार बादरायणव्यास तथा भाष्यकार शङ्करभगवत्पाद का विस्तृत परिचय दिया गया है। इस ग्रन्थ में वैदिक कर्ममार्ग तथा ज्ञानमार्ग इन दोनों का समन्वय दिखाकर वैदिक ज्ञान-कर्मसमुच्चयवाद की पुष्टि की गई है। यह ग्रन्थ चौखम्बा-विद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है। पृष्ठ 528 / मूल्य भा.रू. 300.00

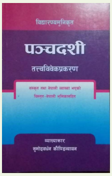

पञ्चदशी (प्रथमप्रकरणम्) संस्कृत तथा नेपाली व्याख्यासहित। व्याख्या.– सुमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन। विद्यार्थी पुस्तक भण्डार, काठमाण्डू, वि.सं. २०७०। पृष्ठ 128 / मूल्य भा.रू. 100.00

साहित्य-समालोचनाशास्त्र

काव्यप्रकाशः [Literary Criticism of Sanskrit Literature, 1980]

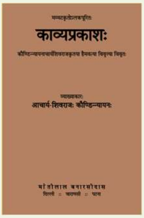

(आचार्यकौण्डिन्न्यायनकृतया हैमवत्या संस्कृतव्याख्यया सहितः, सन् १९८०)– विद्यार्थिहितकारिणी तथा विद्वज्जन-प्रमोदकारिणी नवीन संस्कृतव्याख्या से युक्त। भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रों से काव्यप्रकाश में व्याख्या प्रस्तुत होनेपर भी नेपाल से कोई व्याख्या प्रकाशित नहीं थी। इस अभाव को यह विशिष्ट व्याख्या अच्छी तरह मिटा देती है। व्याख्याता ने काव्यप्रकाशजैसे साहित्यशास्त्र के मूर्धन्य ग्रन्थ में सकलशास्त्र-मन्थनपूर्ण इस व्याख्या को अपने ३४ वर्ष के वय (उम्र) में ही पूर्ण करके अपनी विलक्षण प्रतिभा और विद्वत्ता का परिचय दिया था। इससे व्याख्याता में युवावस्था में ही कितने शास्त्रों की गम्भीर विद्वत्ता थी यह बात भी स्पष्ट होती है। उन्होंने व्याख्यासमाप्ति में कहा था–

न चातिविस्तृतं नातिसङ्क्षिप्तं सारगर्भकम् ।
पदवाक्याभिसन्धीनां स्फोरकं विशदं स्फुटम् ।।
प्रमाणवाक्यैः पूर्वेषां युक्तं सन्तुलनात्मकम् ।
न केवलं परोक्तस्यैवार्थस्य प्रतिपादकम् ।।
व्याख्यानमिदमाहार्षमुपग्राह्यतया नवम् ।
भूयादिदं बुभुत्सूनां विदुषां च समं प्रियम् ।।
मिते बाणर्षिखशरैर्वर्षे (५०७५) यौधिष्ठिरे शुभे।
धनुर्मासे च दिवसे चाष्टमे मार्गशीर्षगे ।।
शुक्लेपक्षे नवम्यां च रेवत्यां पूरिता कृतिः ।
इषदूनचतुस्त्रिंशद्वर्षकेण मया मुदा ।।

यह ग्रन्थ मोतीलाल बनारसी दास ने प्रकाशित किया है। पृ. 602 / (अप्राप्य)

धर्मशास्त्र

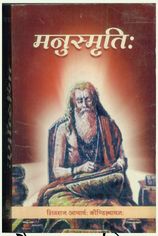

मनुस्मृतिः (सुपरिमार्जितया कल्लूकभट्टकृतया मन्वर्थमुक्तावल्या हिन्दीव्याख्यया च समेता, सन् २००७, २०१०, २०१४, २०१८, २०२१), इसमें कुल्लूक भट्ट की बहुप्रचारित व्याख्या में ४०४ स्थलों में विशेष रूप में पाठशोधन किया गया है। यह विशिष्ट हिन्दी भूमिका तथा श्लोक-पादानुक्रमणिका से युक्त संस्करण है। हिन्दी व्याख्या में विशेष स्पष्टीकरण भी समाविष्ट है। यह ग्रन्थ चौखम्बा-विद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है।

पृष्ठ 1024 / मूल्य भा.रू. 750.00

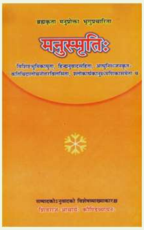

मनुस्मृति (श्लोकार्धकानुक्रमणीयुक्त, हिन्दीव्याख्यायुक्त, सन् २००८, २०१३, २०१७, २०१९) इस ग्रन्थ में आधुनिक जनों के द्वारा मनुस्मृति में किए गए आक्षेपों का उत्तर भी विवेचनात्मक रूप में वेद-स्मृति-पुराण शास्त्रों के प्रमाणों के साथ दिया गया है। वैदिक-सनातन-वर्णाश्रम धर्म के ऊपर आधुनिक लोगों से किए गए आक्षेपों का उत्तर भी यहीं से प्राप्त होता है। भूमिका में सनातन धर्म की रक्षा के

लिए वर्तमान काल में ब्राह्मणादि के कर्तव्य भी बताए गए हैं। यह ग्रन्थ चौखम्बा-विद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है। पृष्ठ 672 / मूल्य भा.रू. 400.00

मनुस्मृतिः (‘वैदिकप्रिया’नामकसंस्कृतव्याख्यासहिता)– मनुस्मृति के सभी मुख्य व्याख्याओं का सार लेकर तथा श्रुति-स्मृति-पुराणादि ग्रन्थों के अनुशीलन से प्राप्त विस्तृत ज्ञान को उपयोग करके यह नवीन संस्कृतव्याख्या विरचित है। यह व्याख्याग्रन्थ अप्रकाशित है।

गौतमधर्मसूत्रम् (सुपरिमार्जित हरदत्तकृत मिताक्षरा संस्कृतव्याख्या तथा

हिन्दीव्याख्या युक्त, मूल सूत्र तथा मिताक्षराव्याख्या के अनेक स्थलों में हस्तलेख के आधार पर विशेष रूप से शोधित)– समीक्षात्मक विस्तृत भूमिका से युक्त तथा प्रमाणवचनसहित विस्तृत हिन्दी व्याख्या से युक्त संस्करण, सम्पादक तथा हिन्दी व्याख्याकार–प्रमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन। इसमें मूल सूत्र में ३८ स्थलों में तथा हरदत्तकृत व्याख्या में १२२ स्थलों में हस्तलेखादि के आधार पर विशेष रूप में पाठशोधन किया गया है। भूमिका तथा हिन्दीव्याख्या में विभिन्न धर्मशास्त्रीय विषयों का विशेष विवेचन भी किया गया है। (चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, सन् २०१५)। पृष्ठ 592 / मूल्य भा.रू. 500.00

प्रायश्चित्तव्यवस्था (काठमाण्डू, २०४९ वै.)– इस में काशी के विद्वानों से प्रदत्त भारतवर्षबहिर्गमनादि-दुरित का प्रायश्चित्त की धर्मशास्त्रीय व्यवस्था

प्रकाशित है। बृहदारण्यकोपनिषद्, विष्णुधर्मसूत्र, शङ्खस्मृति, ब्रह्माण्डपुराण इत्यादि के **“न जनमियान्नान्तमियात्”** इत्यादि वचनों में भारतवर्षबहिर्गमन का निषेध है। भारतवर्षीय राष्ट्रियता की दृष्टि से यह महत्त्वपूर्ण कार्य है ऐसा सम्पादक की मान्यता थी। भारतवर्ष ही पुण्यभूमि, आध्यात्मिक साधनाभूमि तथा वैदिक कर्मभूमि भी है। इस विषय में शास्त्रों में असङ्ख्य वचन पाए जाते हैं। शास्त्रनिष्ठ, धर्मनिष्ठ तथा कर्मनिष्ठ ब्राह्मणादि से इस सिद्धान्त का पालन होना

उचित और आवश्यक भी है। इस ग्रन्थ में नेपाली भाषा में नेपाल के धार्मिक-सांस्कृतिक पक्ष का कुछ इतिवृत्त का वर्णन भी संलग्न है। यह ग्रन्थ स्वाध्याय-शाला (काठमाण्डू) से प्रकाशित है। पृष्ठ 80 / मूल्य भा.रू. 25.00

गुरुकुलीय शिक्षा, उपनयन संस्कार, नित्य सन्ध्योपासन तथा ब्रह्मयज्ञ (पुस्तिका)– इस पुस्तिका में वर्तमान समय में वैदिक शास्त्रीय आचार-पालन का महत्त्व तथा वेदाध्ययन की शास्त्रीय पद्धति, नित्य सन्ध्योपासन तथा ब्रह्मयज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है। वैदिक गुरुकुलीय शिक्षापद्धति के पाठ्यक्रम को भी दिखाया गया है। हिन्दी (पृष्ठ 8)। यह पुस्तिका अन्तर्जाल (archive.org) में भी उपलब्ध है।

भारतीय प्रस्तावित शिक्षासम्बद्ध दश वर्षीय नीति की प्रस्तावना (VISION And ROAD MAP For the Development of Sanskrit Ten year perspective Plan) को पढकर उसमें विस्तृत टिप्पणी की है। इसमें वर्तमान समय में कर्तव्य विविध प्रकार के कार्य के सुझाव भी दिए गए हैं। यह पुस्तिका भी अन्तर्जाल (archive.org) में भी उपलब्ध है।

वैदिक सनातन कर्मकाण्ड

वैदिकयज्ञा औपनिषदमात्मज्ञानं च– इस शीर्षक के विद्यावारिधि के अपने शोधप्रबन्ध में (सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, सन् १९८६) उन्होंने श्रौत कर्मकाण्ड (वैदिक यज्ञ) का माध्यन्दिनीयवाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेदशाखा के मन्त्र-संहिता, ब्राह्मणग्रन्थ (शतपथब्राह्मण), श्रौतसूत्र (कात्यायनश्रौतसूत्र), परिशिष्ट-ग्रन्थ तथा अन्य ग्रन्थों के आधार पर शुद्ध एवम् प्रामाणिक पद्धति दिखाई गई है। कतिपय स्थलों में अन्य व्याख्याताओं तथा पद्धतिकारों का प्रतिपादन का युक्तिपूर्वक सप्रमाण संशोधन भी किया गया है। यहाँ अग्न्याधान, अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, चातुर्मास्य, निरूढपशुबन्ध, अग्निष्टोम सोमयाग, राजसूय, वाजपेय इत्यादि वैदिक यज्ञों की पद्धतियाँ दिखाई गई हैं। साथ में वैदिक यज्ञों के अनुष्ठान की आत्मज्ञान में उपकारकता भी स्पष्ट किया गया है। यह ग्रन्थ अमुद्रित है।

माद्ध्यन्दिनीयवाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेद-मन्त्रब्रह्मयज्ञसंहिता– अभी तक स्वशाखा वेद के मन्त्रसंहिता का पूर्णतया शुद्ध संस्करण भारतवर्ष के किसी भी स्थान से प्रकाशित नहीं हुआ है। कतिपय वैदिक विद्वान् गङ्गेश्वरानन्द के "भगवान् वेदः" (वि.सं. २०२७) में प्रकाशित शुक्लयजुर्वेद को परम शुद्ध मानते हैं। किन्तु वहाँ भी बहुत स्थलों में अशुद्धियाँ बाँकी हैं। अन्य बहुप्रचारित संस्करणों में तो अनगिनत स्थलों में अशुद्धियाँ हैं। इस विषय में "माध्यन्दिनीय-वाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेदसंहिताया मुद्रितरूपाणां शुक्लयजुर्वेदप्रातिशाख्य-दृष्ट्या समीक्षात्मकमध्ययनम्" शीर्षक के विद्यावारिधि के शोधप्रबन्ध में भलीभाँती विवेचना किया गया है (आमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन, सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय, सन् २००८)। अतः शुक्लयजुर्वेदप्रातिशाख्य, कातीय-प्रतिज्ञासूत्र, याज्ञवल्क्यशिक्षा तथा अन्य कतिपय शुक्लयजुर्वेदीय शिक्षाग्रन्थों के गम्भीर अध्ययन के आधार पर इस ग्रन्थ के परिशुद्ध रूप का सप्रमाण टिप्पणीसहित सम्पादन किया गया है। यह ग्रन्थ अप्रकाशित है।

माद्ध्यन्दिनीयवाजसनेयिशुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायि-निरग्निकद्विज-सदाचारकर्म-संस्कारकर्म-श्राद्धकर्मादि-**वैदिकमन्त्रसङ्ग्रहः** सपरिशिष्टः [A Collection of Mantras for Grihya Rituals of Maddhyandineeya recension of Shuklayajurveda, 1993] (२०५२ वै.)– इस ग्रन्थ में प्रचलित नित्यकर्मादिपद्धतियों के स्वशाखाविरुद्ध अंशों के संशोधन के लिए सप्रमाण निर्देशन भी हैं। परिशिष्ट में लोक में प्रचलित प्रमुख पौराण कर्मों में आवश्यक प्रमुख मन्त्रों का और स्तोत्रों का भी सङ्ग्रह है। अन्त्य में वैदिक कालगणनासिद्धान्त और प्रचलित ज्योतिष का सङ्क्षिप्त ज्ञान भी श्लोकों में दिया गया है। यह ग्रन्थ स्वाध्यायशाला (काठमाण्डू) से प्रकाशित है। इस ग्रन्थ का शास्त्रीय नियमपूर्वक गुरुमुख से अध्ययन-अध्यापन करने-कराने की व्यवस्था सभी कुलीन माध्यन्दिनीय-वाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेद-शाखी ब्राह्मणों को करना चाहिए।

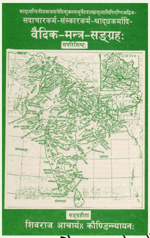

पृष्ठ 156 / मूल्य भा.रू. 65.00

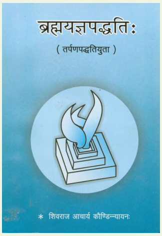

मा.वा.शुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायिनां **ब्रह्मयज्ञपद्धतिः** (विस्तृत-प्रस्ताविकायुता, सन् २००४)– ब्रह्मयज्ञ (दैनिक नित्य वेदपाठ) के विषय में ज्ञातव्य अनेक सप्रमाण विषयों से युक्त इस ग्रन्थ में वैदिक समाज में ब्राह्मण का स्थान, ब्राह्मणों का आचार, ब्राह्मणों का कर्तव्य, वैदिक वाङ्मय के साथ ब्राह्मणों का सम्बन्ध और ब्रह्मयज्ञ की अवश्यकर्तव्यता इत्यादि विषय भी प्रतिपादित हैं। यह ग्रन्थ चौखम्बा-विद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है।

पृष्ठ 224 / मूल्य भा.रू. 50.00

मा.वा.शुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायिनां **सन्ध्योपासनपद्धतिः** (विस्तृतप्रस्ताविका-

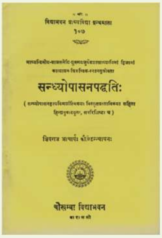

युता, सन् २०००, २०१८)– सन्ध्योपासन की महत्ता, ब्राह्मण के लिए सन्ध्योपासन की नित्य कर्तव्यता, सन्ध्योपासन का रहस्य, स्वशाखीय शुद्ध वैदिक सन्ध्योपासनपद्धति इत्यादि विषय में वेद, स्मृति और पुराणों के प्रमाणवचनसहित प्रभूत प्रकाश डाला गया है। इस ग्रन्थ से भारतवर्षीय वैदिक ब्राह्मणों में स्वशाखा-श्रुतिसूत्रों की अनुसरणीयता की चेतना में विस्तार हुआ है। स्वशाखाश्रुतिसूत्रानुसारी पद्धति के प्रयोग करने की अत्यावश्यकता के सम्बन्ध में भी ब्राह्मणों में जागरूकता आने लगी है। यह ग्रन्थ चौखम्बा-विद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है।

पृष्ठ 160 / मूल्य भा.रू. 50.00

मा.वा.शुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायिनां **सँस्कारपद्धतिः** (विस्तृतभूमिकायुता, सन्

२०१९)– संस्कारों की महत्ता, ब्राह्मण के लिए उपनयन संस्कार का महत्त्व इत्यादि विषय में वेद, स्मृति और पुराणों के प्रमाणवचन सहित नेपाली भाषा में प्रभूत प्रकाश डाला गया है। इसमें जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमणिका, चूडाकरण, उपनयन, उपाकर्म-उत्सर्जन तथा समावर्तन संस्कारों की पारस्करगृह्यसूत्रानु-सारिणी पद्धतियाँ हैं। (संस्कृत मूल तथा नेपाली संक्षिप्त अनुवाद)। यह ग्रन्थ

स्वाध्यायशाला (काठमाण्डू) से प्रकाशित है। [इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद प्रकाशनापेक्षी है।]
पृष्ठ 784 / मूल्य भा.रू. 350.00

मा.वा.शुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायिनां **विवाहपद्धतिः** (विस्तृतभूमिकायुता, २०२३)–

यह पारस्करगृह्यसूत्रानुसारिणी पद्धति है। भूमिका में विवाह सँस्कार के विषय में नेपाली में वेद, स्मृति और पुराणों के प्रमाण-वचन सहित नेपाली भाषा में प्रकाश डाला गया है (संस्कृत मूल तथा नेपाली संक्षिप्त अनुवाद)। यह ग्रन्थ स्वाध्यायशाला (काठमाण्डू) से प्रकाशित है। [इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद प्रकाशनापेक्षी है।]
पृष्ठ 672 / मूल्य भा.रू. 420.00

मा.वा.शुक्लयजुर्वेदशाखानुसारिणी **अन्त्यकर्मपद्धतिः** (विस्तृतभूमिकासहिता,

सन् २००८, संस्कृत मूल तथा नेपाली संक्षिप्त अनुवाद)– मूल स्वशाखासूत्रोक्त पद्धति के रूप को सप्रमाण दिखाया गया है। भूमिका में शुक्लयजुर्वेदसंहिता, शतपथब्राह्मण, कात्यायन-श्रौतसूत्र तथा पारस्कर-गृह्यसूत्र के आधार पर विस्तृत प्रतिपादन नेपाली भाषा में किया गया है। [इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद प्रकाशनापेक्षी है।] यह ग्रन्थ रत्न पुस्तक भण्डार (काठमाण्डू) से प्रकाशित है।
पृष्ठ 624 / मूल्य भा.रू. 110.00

मा.वा.शुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायिनाम् **एकोद्दिष्टश्राद्धपद्धतिः** (विस्तृतभूमिका-

सहिता, काठमाण्डू, २०५८, द्वि.सं. २०६४ वै.)– इस ग्रन्थ की भूमिका में श्राद्ध की परिभाषा, महत्ता, कर्तव्यता इत्यादि के विषय में वेद-वेदाङ्ग-स्मृति-पुराणों के वचनों के आधार पर विस्तृत प्रतिपादन नेपाली भाषा में किया गया है। पद्धति के मूल स्वशाखासूत्रोक्त रूप को सप्रमाण स्पष्ट रूप में दिखाया गया है। इस ग्रन्थ का प्रथम संस्करण स्वाध्यायशाला से और द्वितीय संस्करण रत्न पुस्तक भण्डार (काठमाण्डू) से प्रकाशित है।
पृष्ठ 224 / मूल्य भा.रू. 45.00

मा.वा.शुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायिनाम् **पार्वणश्राद्धपद्धतिः** (विस्तृतभूमिका-सहिता, संस्कृत मूल तथा नेपाली संक्षिप्त अनुवाद, २०६४, द्वि.सं.२०७२ वै.)–

मूल स्वशाखासूत्रोक्त रूप को सप्रमाण दिखाया गया है। भूमिका में श्राद्धसम्बद्ध शुक्लयजुर्वेदमन्त्रसंहिता, शतपथब्राह्मणवचन, कात्यायनश्रौतसूत्रवचन इत्यादि भी हैं। स्मृति-पुराणों के वचन के आधार पर विस्तृत भूमिका नेपाली भाषा में है। यह ग्रन्थ रत्न पुस्तक भण्डार (काठमाण्डू) से प्रकाशित है।

पृष्ठ 328 / मूल्य भा.रू. 95.00

[एकोद्दिष्टश्राद्धपद्धति एवं पार्वणश्राद्धपद्धति दोनों समाविष्ट ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद निष्पन्न है और प्रकाशनापेक्षी है।]

चतुरशीतिपूजाविधिः (सहस्रचन्द्रदर्शनव्रतोद्यापनपद्धतिः) वि.सं.२०६३ (सन् २००६)। स्कन्दपुराण के अनुसार रचित नेपालीभाषाभूमिका तथा नेपाली अनुवादयुक्त पद्धति। तान्त्रिक अथवा मिश्रपद्धति से यह पद्धति अधिक ग्राह्य है। रचयिता– पण्डित कविराज नरनाथशर्मा आचार्य।

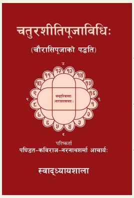

पृष्ठ 112 / मूल्य भा.रू. 35.00

वर्षकृत्यपद्धतिः प्रचलित विविध वार्षिक कृत्यों का स्वशाखानुकूल पद्धति। प्रतिवर्ष अनुष्ठान किए जानेवाले नागपूजा, यज्ञोपवीताभिमन्त्रण, ऋषिपञ्चमी-पूजा, शारदनवरात्रपूजा, भ्रातृद्वितीयाकृत्य, नवान्नप्राशन इत्यादि की पद्धतियाँ यहाँ सङ्गृहीत हैं। यह ग्रन्थ अप्रकाशित है।

गरुडपुराणम् (प्रेतकल्पात्मकम्, सन् २००४, २०१५)– नौनिधिरामद्वारा रचित

सारोद्धार गरुडपुराण प्रेतकल्प को ही मूल गरुडपुराण मानने के भ्रम का निवारण करनेवाला यह मूल गरुडपुराण का ४९ अध्यायात्मक प्रेतकल्प है। यह हिन्दीभाषा-टीकासहित है। भूमिका में पुराणों के और गरुडपुराण के विषय में प्रकाश डालने के साथसाथ अन्त्यकर्मविषयक ज्ञातव्य अनेक बातों का शास्त्रीय-

विमर्शयुक्त परिचय भी सङ्गृहीत किया गया है। यह ग्रन्थ चौखम्बा-विद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है।

पृष्ठ 560 / मूल्य भा.रू. 250.00

संस्कृतभाषाशिक्षण

व्यावहारिकं संस्कृतम् [Sanskrit Reader Book for Infants 2020, 2022] (सचित्रं बालपुस्तकम्, २०७७, २०७९ वै.) प्रमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन। सर्वथा पाणिनीय-व्याकरणसम्मत संस्कृतभाषा को सरलता से सीखने-सिखाने के लिए उपयोगी संस्कृत-वर्णमाला, सरलवाक्य, बालकविता, सङ्ख्याशब्द, इत्यादि विषयों से युक्त अपूर्व क्रमबद्ध बालमनोहर चित्रसहित पाठ्यपुस्तक है। यह ग्रन्थ स्वाध्यायशाला (काठमाण्डू) से प्रकाशित है।

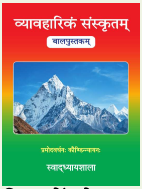

पृ. 72/भा.रू.100.00

व्यावहारिकं संस्कृतम् [Sanskrit Reader, Book 1, 1991] (सचित्रं प्रथमम् पुस्तकम्, २०५०, २०६७, २०७६, २०८० वै.)– सर्वथा पाणिनीय-व्याकरणसम्मत संस्कृतभाषा को सरलता से सीखने-सिखाने के लिए उपयोगी संस्कृतवर्णमाला, सरलवाक्य, बालकविता, सङ्ख्याशब्दप्रयोग (१–१० पुं., स्त्री, नपुं), संस्कृतगुणनसारणी (१–५), सङ्ख्याशब्द तथा अङ्क इत्यादि विषयों से युक्त अपूर्व क्रमबद्ध सचित्र पाठ्यपुस्तक है। यह ग्रन्थ स्वाध्यायशाला (काठमाण्डू) से प्रकाशित है।

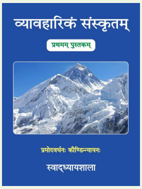

पृष्ठ 80 / मूल्य भा.रू. 100.00

व्यावहारिकं संस्कृतम् [Sanskrit Reader, Book 2, 1996] (सचित्रं द्वितीयम् पुस्तकम्, २०५३, २०७५, २०८० वै.)– सरलवाक्य, बालकविता, सङ्ख्याशब्दप्रयोग (११–२० पुं., स्त्री, नपुं), संस्कृतगुणनसारणी (६–११), वैदिकशास्त्रपरिचयश्लोक इत्यादि विषयों से युक्त। यहाँ पाणिनीयव्याकरण के अनुसार ही सामान्य भूतकाल में लुङ्, अनद्यतन भूतकाल में लङ् तथा परोक्ष भूतकाल में लिट् लकारों का प्रयोग सोदाहरण भलीभाँती समझाया गया है, जो अन्यत्र दुर्लभ है। भूमिका

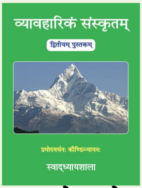

में संस्कृत के शास्त्रीय रूप से शुद्ध उच्चारण कैसे किया जाय इस विषय का निर्देश भी समाविष्ट है। यह ग्रन्थ स्वाध्यायशाला से प्रकाशित है।

पृष्ठ 104 / मूल्य भा.रू. 110.00

व्यावहारिकं संस्कृतम् [Sanskrit Reader, Book 3, 2001] (सचित्रं बाल-

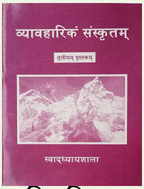

शिक्षार्थं तृतीयम् पुस्तकम्, २०५८)– यह सभी विभक्तियों का तथा सभी लकारों का प्रयोग, सन्धि का अभ्यास, समासों का अभ्यास, तव्य-अनीयर्-ण्वुल्-तृच्-शतृ-शानच्-तुमुन्-क्त-क्त्वा-तरप्-तमप् इत्यादि प्रत्ययों का प्रयोगात्मक ज्ञान, प्रातिपदिकरूपावलि, धातुरूपावलि, पूरणप्रत्ययान्त प्रमुख सङ्ख्याशब्द इत्यादि विषयों से युक्त पाठ्यपुस्तक है। यह ग्रन्थ स्वाध्यायशाला (काठमाण्डू) से प्रकाशित है।

पृष्ठ 124 / मूल्य भा.रू. 30.00

वाङ्मयेतिहास

वेदवेदाङ्गोपाङ्गविमर्शः [वैदिकवाङ्मय का परिचायक ग्रन्थ, २०७९ वै.]

(मूल ग्रन्थ संस्कृत में तथा सारांश नेपाली में प्रस्तुत है।) आमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन। इसमें विशेष रूप से चारों वेदों की शाखाओं का और ६ वेदाङ्गों का भी सङ्क्षिप्त परिचय तथा प्रथम अङ्ग शिक्षाशास्त्र का विस्तृत परिचय दिया गया है। वेदोपाङ्ग प्रतिपद, अनुपद, छन्दोभाषा, धर्मशास्त्र, मीमांसान्याय और तर्कशास्त्र का भी परिचय दिया गया है। परिशिष्ट में विविध शास्त्रीय निबन्ध समाविष्ट हैं। इस ग्रन्थ में वैदिक वाङ्मय के परिचायक ग्रन्थों में पाई गई त्रुटियों की समीक्षा भी की गई है। (भुँडीपुराण प्रकाशन, काठमाण्डू)।

पृष्ठ 424 / मूल्य भा.रू. 500.00

कतिपय-नैपाल-संस्कृतग्रन्थकार-परिचयः [A collecton of Short Biographies of 180 Nepales Sanskrit Writers, 1991] (२०४८ वै.)– इस ग्रन्थ में प्राचीनकाल, मध्य-काल और आधुनिक काल के नेपालदेशज ज्ञात १८० संस्कृत-

ग्रन्थकारों का सङ्क्षिप्त परिचय दिया गया है। साथ में नेपाल में संस्कृत शिक्षा का इतिहास और वर्तमान स्थिति का परिचय भी संलग्न है। यह ग्रन्थ स्वाध्याय-शाला (काठमाण्डू) से प्रकाशित है। पृष्ठ 100 / मूल्य भा.रू. 25.00

नेपाली भाषा के ग्रन्थ

वृत्तनक्षत्रमाला (An Introduction to Prosody, 1971)। प्रायः लोग छन्द

तथा वृत्तों का भेद नहीं जानते हैं। इस ग्रन्थ में छन्द के अन्तर्गत वृत्त होते हैं यह बात भी समझाया गया है। यहाँ अनुष्टुप्, त्रिष्टुप्, जगती, शक्वरी, अष्टि, अत्यष्टि, अतिधृति इत्यादि छन्दों के अन्तर्गत के श्लोकवृत्त, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, तोटक, द्रुतविलम्बित, भुजङ्गप्रयात, वसन्ततिलका, शिखरिणी इत्यादि २७ वृत्तों का सोदाहरण परिचय नेपाली भाषा में दिया गया है। संस्कृत में भी लक्षण तथा उदाहरण हैं।

पृष्ठ 46 / मूल्य भा.रू. 15.00

जिम्दो नेपालि भासा (Theory of Language, Linguistics, Grammar & Phonetics) इस ग्रन्थ के दो भागों में यास्क, पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि, वररुचि, भर्तृहरि इत्यादि प्राच्य महान् भाषाशास्त्रियों और वैयाकरण के शाश्वत भाषा-व्याकरण-सिद्धान्त के अनुसार भाषा-व्याकरण के सिद्धान्तों का नेपाली भाषा में विस्तृत विवेचन किया गया है। इन सिद्धान्तों का उपयोग हिन्दी इत्यादि भारतीय भाषाओं के व्याकरण में भी किया जा सकता है। मातृभाषाभाषी जनों के उच्चारण के अनुसार ही लेखन करना उचित तथा आवश्यक है यह इन ग्रन्थों में व्याख्यात मुख्य सिद्धान्त है।

प्रथम खण्ड २०३० वै. (part I, 1973)

पृष्ठ 160 / मूल्य भा.रू. 65.00

द्वितीय खण्ड, २०३७वै. (Part II, 1980)

पृष्ठ 292 / मूल्य भा.रू. 85.00

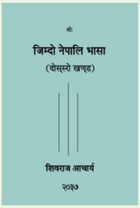

नेपाली वर्णोच्चारणशिक्षा (Nepali Phonetics)। साझा प्रकाशन,

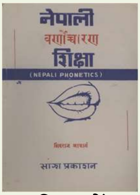

काठमाण्डू से प्रकाशित, विक्रम संवत् २०३१ (1974)। संस्कृत के शिक्षाशास्त्रीय ग्रन्थों में प्रतिपादित सिद्धान्तों के अनुसार नेपाली भाषा के वर्णों की विवेचना के साथ नेपाली मातृभाषा-भाषी जनों के उच्चारण में रहे वर्णों का निर्धारण किया गया है। परिशिष्ट में संस्कृत के दीर्घ स्वर, ऋकार, ए-ओ-ऐ-औ स्वर, ञकार, दन्तोष्ठ्य वकार इत्यादि वर्णों की विस्तृत विवेचना भी शिक्षाशास्त्रीय ग्रन्थ तथा पाणिनीय व्याकरण के सूत्र-वार्त्तिक-भाष्य के विविध सन्दर्भों के आधार में प्रस्तुत किया गया है।

पृष्ठ 494 / (अप्राप्य)

वैदिक धर्म मूल रूपमा (An Introduction to the Vedic religion,

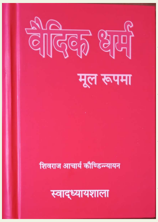

philosophy and culture) प्र.सं. २०४५, द्वि.सं. २०६२, तृ.सं. २०८० (1989, 2005, Third Ed. 2024)– वैदिक-सनातन-वर्णाश्रम धर्म के मूल स्वरूप को इसमें सविस्तार नेपाली भाषा में प्रस्तुत किया गया है। यहाँ वेद, वेदाङ्ग, स्मृति, पुराण इत्यादि विशाल संस्कृत वाङ्मय से असङ्ख्य प्रमाणवचन सङ्कलित करके टिप्पणी में दिए गए हैं। वैदिक धर्म के ऊपर आधुनिक लोगों से किए गए आक्षेपों का युक्ति-उपपत्तिपूर्ण शास्त्रीय उत्तर भी यहाँ समाविष्ट है। भूमिका में सनातन धर्म की रक्षा के लिए वर्तमान काल में ब्राह्मणादि वर्णों के कर्तव्य भी बताए गए हैं।

पृष्ठ 1200/ मूल्य भा.रू. 1200.00

वैदिक हिन्दु धर्म-संस्कृति (२०६५ वै.) 'वैदिक धर्म मूल रूपमा' नाम के

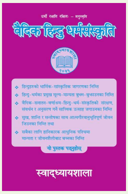

उपर्युक्त विशाल ग्रन्थ का सार अर्थात् वैदिक धर्म का संक्षिप्त परिचय इस ग्रन्थ में दिया है। इस ग्रन्थ में वैदिक वाङ्मय का परिचय, वर्णजातिव्यवस्था, वर्णधर्म, आश्रमधर्म, स्त्रीधर्म, वार्षिक तिथिपर्वपरिचय इत्यादि विषय भी समाविष्ट है।

पृष्ठ 354/ मूल्य भा.रू. 130.00

वैदिक धर्मशास्त्र र सम्पत्तिमा महिलाको अधिकार (आमोदवर्धन

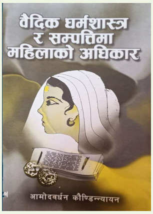

कौण्डिन्न्यायन, २०६३ वै.) वैदिक धर्म में महिलाओं के विषय में कैसी व्यवस्था है इस विषय में यथार्थ जानकारी इस ग्रन्थ में दिया गया है। वैदिक हिन्दु धर्म ने महिलाओं का शोषण किया है ऐसा दुष्प्रचार का शास्त्रीय प्रमाण के आधार पर खण्डन भी यहाँ उपलब्ध है।

पृष्ठ 272/ मूल्य भा.रू. 130.00

वैदिक यज्ञिय उपकरण र वृक्षहरू (Instruments and Plants Used in

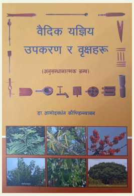

Vedic Rites, 2015)। आमोदवर्धनकौण्डिन्न्यायनकृत। इस ग्रन्थ में वेद-वेदाङ्गों के प्रमाणवचन के साथ वैदिक यज्ञपात्रों का तथा यज्ञिय वृक्षों का सचित्र परिचय नेपाली भाषा में दिया गया है। वैदिक कर्मकाण्ड के लिए इनका बहूत महत्त्व है।

पृष्ठ 176/ मूल्य भा.रू. 160.00

भानुभक्तकृत भाषारामायण– मूल हस्तलेख के अनुसार संशोधित तथा

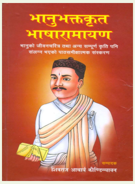

सम्पादित, नेपाली भाषा के आदिकवि भानुभक्त आचार्य के भाषारामायण का पाठसमीक्षात्मक संस्करण, उनके प्रश्नोत्तर-माला, भक्तमाला, वधूशिक्षा तथा स्फुटपद्य सहित। इस ग्रन्थ में भाषारामायण के हस्तलेखों की छायाप्रतिलिपि भी समाविष्ट हैं। वि.सं. २०६७ (2010)।

पृष्ठ 736/ (अप्राप्य)

भानुभक्तकृत भाषारामायण– शिवराजाचार्य-कौण्डिन्न्यायन-सम्पादित।

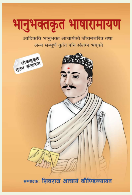

लोकानुकूल सुलभ संस्करण, वि.सं. २०७३ (2017)। नेपाली भाषा के आदिकवि भानुभक्त आचार्य के प्रश्नोत्तरमाला, भक्त-माला, वधूशिक्षा तथा स्फुटपद्य सहित। भूमिका में आदिकवि भानुभक्त का जीवनचरित्र, उनके कृतियों का विशेषताएँ, भाषारामायण के धार्मिक दार्शनिक सांस्कृतिक भाषिक साहित्यिक महत्त्व भी दिखाया गया है।

पृष्ठ 608/ मूल्य भा.रू. 550.00

आदिकवि भानुभक्त आचार्यको सच्चा जीवनचरित्र (प्र.सं. २०१७, द्वि.सं. २०३६, तृ.सं. २०८२ वै.) कवि मोतीरामभट्ट से लिखित भानुभक्त के जीवनी के बहूत से विषयों का संशोधन करनेवाला बृहत् जीवनचरित्र। रचयिता– पण्डित कविराज नरनाथ शर्मा आचार्य (वि.सं. १९६२–२०४५)। "प्रश्नोत्तरमाला तथा भक्त-माला की रचना का आरम्भ पितामह श्रीकृष्ण के अध्यात्म-विद्याभ्यास से प्रभावित होकर भानुभक्त ने विद्यार्थिकाल में वाराणसी में ही किया था। बाल्यकाल से ही पितामह श्रीकृष्ण के अध्यात्मरामायणपाठ सुनतेसुनते उसी से प्रेरित होकर अध्यात्मरामायण का अनुवाद प्रारम्भ किया था" इत्यादि विषय इस जीवनचरित्र के महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं। भानुभक्त के चित्र की विवेचना, भानुभक्तकृत अप्रकाशित १८⅓ फुटकर पद्यों का सर्वप्रथम मुद्रण-प्रकाशन इसी ग्रन्थ में हुआ था। भानुभक्त आचार्य के व्यक्तित्व के विषय में विभिन्न लेखकों के द्वारा लिखित भ्रमात्मक कथनों का निराकरण करके भानुभक्त के सभी पक्ष के व्यक्तित्व का यथार्थ चित्र यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

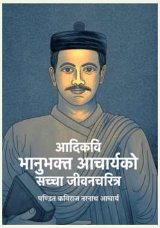

पृष्ठ 400/ मूल्य भा.रू. 625.00

वैदिक-सनातन-धर्मसंस्कृतिशिक्षा, १–३ भाग (सचित्र बाल-पाठ्यपुस्तक, नेपाली भाषा में) आमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन तथा प्रमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन। इस शृङ्खला के सभी पुस्तकों में बहूत से संस्कृत श्लोक तथा उनका अर्थ नेपाली भाषा में दिया गया है। धर्म-संस्कृतिशिक्षापरक प्रारम्भिक पुस्तक के रूप में अध्ययन तथा अध्यापन किया जा सकता है (प्रथम भाग हिन्दी में भी प्रकाशन के लिए तयार है)।

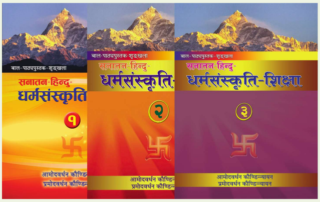

प्रथम भाग पृष्ठ 64/ मूल्य भा.रू. 50.00,

द्वितीय भाग पृष्ठ 64/ मूल्य भा.रू. 50.00,

तृतीय भाग पृष्ठ 72/ मूल्य भा.रू. 65.00

हमारे परमपूज्य पिताजी सुगृहीतनामा शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन के **त्रिभुवन विश्वविद्यालय** (काठमाण्डू, नेपाल) **के जर्नल** में अधोनिर्दिष्ट शोधनिबन्ध प्रकाशित हैं–

वाकारविवेकः (लघुशिक्षाग्रन्थः), त्रिभुवन युनिवर्सिटि जर्नल, ६वर्ष, १ अङ्क, जून १९७१ (ज्येष्ठ–आषाढ २०२८)।

An Elucidatory Note on the Nature of Sanskrit Long Vowels, Journal of the Tribhuvan University Vol. VII, No.1, November 1972 (कार्तिक–मार्ग २०२९)।

आनन्दमयाधिकरणस्य शङ्करभगवत्पादकृत-भाष्याविरोधिनी नव्या योजना, ८ वर्ष, १ अङ्क, जून १९७३ (ज्येष्ठ–आषाढ २०३०)।

वसुधा पत्रिका (काठमाण्डू, नेपाल) में प्रकाशित निबन्ध-अन्तर्वार्तादि–

The Sanskrit व Phoneme and its Place in Nepali– Vasudha, Vol. XIV, No.4, November–December 1971 (मार्गशीर्ष २०२८)।

A Few Moments with a Linguist– Jana Sharma, Vasudha, Vol. XVI, No.7, Feb.– Mar.1978 (फाल्गुन २०३४)।

Linguistic democratization can be a good step towards the democratization of all our efforts– Vasudha, Vol. XVI, No.9, Sept. Oct. 1978 (आश्विन २०३५)।

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय (वाराणसी) की अनुसन्धान-पत्रिका **‘सारस्वती सुषमा’** में प्रकाशित शोधनिबन्ध–

प्रातिशाख्यशिक्षाप्रोक्तानां पाणिन्यादित्रिमुन्यभिमतानां चोदात्तादि-स्वरलक्षणानां समन्वयः काशिकाकार-सिद्धान्तकौमुदीकारादिमतनिराकरणं च, ३७ वर्ष, १–४ अङ्क, २०३९ वै.।

समन्वयसूत्रस्थशाङ्करभाष्यपर्यालोचनम्, ३८ वर्ष, १-२ अङ्क, २०४० वै.।

द्विजातिकन्योपनयनविचारः, ४५ वर्ष, ३–४ अङ्क, २०४७ वै.।

वैदिक-सन्ध्योपासन-पद्धतिविचारः, ५१ वर्ष, १–४ अङ्क, २०५३ वै.।

पारस्करगृह्यसूत्रोक्ताशौचनिरूपणम्, ५२ वर्ष, ३–४ अङ्क, २०५३ वै.।

भारतीय समाचारपत्रों में अधोनिर्दिष्ट निबन्ध प्रकाशित हैं–

हिन्दुराज्य नेपाल : भूत भविष्य और वर्तमान (धर्म बचेगा, तभी नेपाल जीवित रहेगा!)– पाञ्चजन्य, १९९४–९–२० (वि.सं.२०५१-६-४)।

लगधप्रोक्त वेदाङ्गज्योतिष और नववर्षारम्भ– सन्मार्ग (दैनिक), सन् १९९८–४–१,२ (वि.सं. २०५४–१२–१८, १९), वाराणसी।

स्थानसङ्केत

स्वाद्ध्यायशाला

ब्रह्मपुरी, बुढानीलकण्ठनगर–६, हात्तिगौँडा, काठमाण्डू, नेपाल।

email : svadhyaya2036@gmail.com

सम्पर्कसूत्र (ह्वाट्स्याप एवं इमेल)

प्रो. आमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन

+977 9849091467,amoda67@hotmail.com

प्रो. प्रियंवदाम्बा कौण्डिन्न्यायनी काफ्ले

+977 9841822365, priyamvadakafle@gmail.com

प्रो. प्रमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन

+977 9841968262, acharyapramod622@gmail.com

प्रो. सुमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन

+977 9843035397, acharya.sumod@gmail.com

प्रो. डा. सम्मोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन

+977 9841968292, sammodacharya@gmail.com